आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024
Received:16/09/2024; Accepted:18/09/2024; Published:26/09/2024

लेख

राहुल सांकृत्यायन और किसान आंदोलन

- **डॉ. संगीता श्रीवास्तव**
सचिव
महापंडित राहुल सांकृत्यायन
शोध एवं अध्ययन केंद्र, संस्था वाराणसी

डॉ. संगीता श्रीवास्तव,**राहुल सांकृत्यायन और किसान आंदोलन** , आखर हिंदी पत्रिका, खंड 4/अंक 3/सितंबर 2024, (250-257)

महापंडित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व प्रगतिशील चेतना के सतत विकास का साक्षी है । अपराजेय जिजीविषा, अनंत जिज्ञासा, उत्कट स्वतंत्र प्रेम और जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टि इन्हीं तत्वों से उनका व्यक्तित्व संगठित था। इस तत्वों ने उन्हें निरंतर गतिशील रखा । वह कभी और कहीं बंधन में नहीं फंसे । ना उन्हें देश ने बांधा, ना काल ने । उनका जीवन एक ऐसी रेखा है जिसमें स्थिति गति में विलीन हो गई है।

विश्व विख्यात विद्वान राहुल सांकृत्यायन के साहित्यिक पक्ष से अधिकांश लोग परिचित हैं यद्यपि वे मूलतः एक साहित्यकार थे तथा पर उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का एक पक्ष किसान नेता का है ।उन्होंने अपने बहुमूल्य जीवन का एक बड़ा हिस्सा सामंत जमींदार जुल्म के विरुद्ध किसान जागरण में व्यतीत किया। राहुल जी का जीवन प्रवाह में नदी के सदृश्य गतिमान था। सत्य की खोज में वे कभी वैष्णव बने, कभी आर्य समाज को स्वीकार किया ,अंत में बौद्ध बने । राजनीति के क्षेत्र में राहुल जी पहले कांग्रेसमें थे, फिर किसान आंदोलन का नेतृत्व किया। वह समाजवादी भी हुए और अंत में साम्यवादी बने।

जून 1921 में छपरा में कांग्रेस कमेटी की एक बैठक से राहुल जी राजनीति में आए। वह असहयोग आंदोलन के दिन थे । 'स्वराज' हासिल करने की मुहिम में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया । इस समय वे 'रामोदरदास' के नाम से जाने जाते थे । इसी वर्ष छपरा में आई भयंकर बाढ़ में उन्होंने बाढ़- पीड़ितों और भूखों की सेवा के लिए अथक परिश्रम किया । अन्न के बोरे सिर पर ढोकर पीड़ितों तक पहुंचाया। राहुल बाबा के प्रयासों से एकमा में नई जागृति आई । राहुल जी ने यहां अपना भाषण छपरा की बोली मल्ली या जिसे भोजपुरी भी कहते हैं में

दिया । इससे जनता बहुत प्रभावित हुई । अब उन्हें सभी ' बाबा' के नाम से पुकारने लगे सब उन्हें 'राहुल बाबा' कहते।

31 जनवरी 1922 में राहुल जी के सभापतित्व में जिला कांग्रेस कमेटी की बैठक हो रही थी, जिसमें पुलिस उन्हें आकर गिरफ्तार करके ले गई । यही जेल में जाने का उनका पहला अनुभव था। उन्हें 6 महीने की जेल हुई। वह बक्सर जेल भेजे गए । उन्होंने सिपाही से आग्रह करके हथकड़ियां पहनी तो उन्हें नाना द्वारा पहनाए गए चांदी के कड़े याद आ गए।

कभी समय व्यर्थ न करने वाले राहुल जी ने

जेल में रह भी अपनी ज्ञान पिपासु प्रवृति निरंतर जागरूक रही और जेल में ही उन्हें त्रोत्सकी की 'बोल्शेविक और रूसी क्रांति'

पुस्तक पढ़ने को मिली पहले जेल यात्रा में कुरान का संस्कृत में अनुवाद किया और दूसरी जेल यात्रा में हिंदी में उसे रूपांतरित किया फिर हजारीबाग की दूसरी जेल यात्रा में उन्होंने 22 वीं सदी हिंदी में लिखी।

उसी पहली जेलयात्रा में रामोदार दास ने कुरान का भी संस्कृत में अनुवाद किया था। जिसे दूसरी जेल यात्रा में हिंदी में किया गया। उन्हीं दिनों कुरान के साथ-साथ वेदांत सूत्रों की हिंदी टीका भी तैयार हुई थी ।

बक्सर जेल से बाहर आने के कुछ ही महीने बाद बाबा रामोदार दास को छपरा जिले का मंत्री चुना गया। उस साल दिसंबर 1922 में कांग्रेस अधिवेशन गया में होने वाला था। देशबंधु चितरंजन दास, गया कांग्रेश के प्रसिद्ध प्रेसीडेंट चुने गए थे। रामोदारदास पंडित मोतीलाल नेहरू की स्वराज पार्टी की परिवर्तनवादी नीति के समर्थक थे। उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं के साथ कांग्रेसमें सक्रिय भाग लिया। अब वे जात पांत और छुआछूत का खुलकर विरोध करने लगे थे । उन्होंने गया में 'सुदामा भोजनालय' खुलवाया । उसी समय उनके प्रयास से सोनपुर में प्रांतीय किसान सभा की स्थापना हुई।

रामोदारर दास के प्रयास से कांग्रेश कमेटी ने उनका यह प्रस्ताव पास कर दिया था कि बोधगया का महाबोधि मंदिर बौद्धों को मिल जाना चाहिए परंतु गया-कांग्रेस में उस प्रस्ताव को आने नहीं दिया गया । इस अवसर पर उन्होंने वर्मा और श्रीलंका के कई बौद्ध भिक्षुओं को गया बुलाया था और उनके पाली, संस्कृत और अंग्रेजी भाषणों का अनुवाद किया था जिससे लोग उन्हें बहु भाषाविद् मानने लगे थे।

राहुल जी के जीवन की यह एक बहुत बड़ी खूबी रही कि वे एक काम के पूरा होते ही दूसरे में जुट जाते थे एक क्षेत्र को छोड़कर एका एक दूसरे में पहुंच जाते थे।" सैर कर दुनिया की गाफिल" के मंत्र ने उन्हें कभी एक स्थान पर लंबे समय तक टिकने नहीं दिया ।

फरवरी 1923 के आरंभ में साधु रामोदार दास नेपाल यात्रा के लिए रवाना हुए, महेंद्र नाथ सिंह को साथी चुना । इस यात्रा के कुछ दिन पहले पटना के सार्वजनिक सभा में राजेंद्र बाबू के बाद साधु रामोदार का भी भाषण हुआ । नेपाल से लौटने पर पता चला कि उनकी गिरफ्तारी का वारंट निकला है । साथियों ने जेल जाने के

बजाय वहां से हट जाने की सलाह दी रामोदार दास ने गिरफ्तार होना पसंद किया और पुलिस को सूचना दे दी । देशद्रोह का मुकदमा चला । दो साल की सादी कैद की सजा हुई । आगे के 2 साल अप्रैल 1923 से अप्रैल 1925 साधु रामोदार ने बक्सर और हजारीबाग जेलों में गुजारे। जेल में लिखने पढ़ने का अच्छा अवसर मिला । वहां रामोदारदास ने 22 वीं सदी को हिंदी में लिख डाला। यह राहुल जी की हिंदी में प्रकाशित पहली पुस्तक थी , जो बाद में खूब लोकप्रिय हुई । उसके बाद 2 साल की जेल यात्रा पूरी हुई । राहुल जी लिखते हैं " 2 वर्ष इतनी जल्दी बीत गए कि मुझे मालूम ना हुआ। उससे पहले जिंदगी के किन्ही दो वर्षो में दत्त चित्त हो पढ़ने लिखने मेंें इतना व्यस्त नहीं रहा।

18 अप्रैल 1925 ईस्वी को साधु रामोदार दास हजारीबाग जेल से बाहर आए । तो उनके जीवन के 32 साल पूरे हो चुके थे सबसे पहले उन्होंने छपरा जिले का दौरा किया। मीरगंज स्टेशन पर उतरे, तो पता चला। हिंदू मुसलमान का झगड़ा शुरू हो गया है । झंडा जुलूस के मामले को लेकर था । हिंदू ज्यादा थे, मुसलमान कम।

साधु रामोदार ने कस्बे में जगह जगह पहुंचकर निशस्त्र मुसलमानों की रक्षा की। कई मुसलमानों के शरीर को अपने शरीर से ढांक कर बचाया। राहुल जी लिखते हैं" मेरी काली अल्फी, मेरा नाम और मेरा राष्ट्रीय कार्य लोगों को मालूम था, किसी ने मेरे शरीर में हाथ लगाने की हिम्मत न की "

1927 ईस्वी के आरंभ में गांधीजी के छपरा सारण दौरे के प्रबंध में जुटे । काउंसिल चुनाव और डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चुनाव में कांग्रेस का काम किया फिर श्रीलंका चले गए 1931 में राहुल जी ने सत्याग्रह में भाग लिया और जेल गए। सन् 1934 में जब बिहार सोशलिस्ट पार्टी गठित हुई तो वे उसके सचिव नियुक्त हुए। बाद में उन्होंने बिहार किसान सभा और बिहार कम्युनिस्ट पार्टी की स्थापना की थी। गांधीजी के सिद्धांतों से तीव्र असहमति होने के बाद भी उन्होंने कम्युनिस्ट पार्टी को पूर्ण रूप से स्वीकार किया ,जब तक कि कम्युनिस्ट पार्टी से उनका संबंध विच्छेद 1946 में नहीं हो गया।

1939 में भी किसान आंदोलन में जुट गए स्वामी सहजानंद सरस्वती के साथ उन्होंने बिहार में किसानों को किसान सभा से जोड़ने का काम किया। 24- 25 फरवरी 1940 में वे मोतिहारी के किसान सम्मेलन के अध्यक्ष बने । इसी वर्ष भी फिर बंदी बनाए गए और लगभग ढाई वर्षो तक जेल में रहे। जेल में ही 'दर्शन दिग्दर्शन' जैसे वृहद ग्रंथ की रचना की। इसमें प्राय: 3000 वर्षों के दर्शन का आश्चर्यचकित करने वाला आलोचनात्मक इतिहास है।इस अवधि में वे हजारीबाग और देवली जेल में रहे।

अपनी सभी जेल यात्राओ में राहुल जी ने समय का खूब जमकर उपयोग किया। 1937 से कम्युनिज्म की ओर आसक्ति उनकी बढीं, तो उन्होंने 'क्या करें', 'सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी का इतिहास', 'राहुल जी का अपराध' और 'सोवियत न्याय' 1937 से 39 के बीच लिखा तथा दिमागी गुलामी और तुम्हारी क्षय नामक राजनैतिक कृतियों का सृजन किया।

स्वामी सहजानंद ने अपने 'जीवन संघर्ष' में लिखा है -"बेशक जैसे मुंगेर के लिए कार्यानंद और गया के लिए यदुनंदन हैं, उसी तरह सारण के लिए राहुल जी हैं (पृष्ठ 524) जिस तरह बडहिया टाल के किसान सत्याग्रह के साथ उनके नेता कार्यानंद शर्मा और खेड़ा के किसान सत्याग्रह के साथ उनके नेता यदुनंदन शर्मा का नाम जुड़ा है उसी प्रकार अमअमवारी किसान सत्याग्रह के साथ उनके नेता राहुल सांकृत्यायन का नाम जुड़ा है। राहुल जी बुनियादी तौर पर एक राजनेता नहीं वरन एक महान अनुसंधान, चिंतक और लेखक थे । उन्होंने जिस समय किसान आंदोलन की हलचल में प्रवेश किया , उस समय तक वे अपनी तिब्बत यात्रा की युगांतरकारी खोजों के कारण विश्व विख्याती प्राप्त कर चुके थे।

उन्होंने जिस लगन साहब आत्मविश्वास त्याग और सूझबूझ से किसानों का नेतृत्व किया उसकी मिसाल बहुत कम किसान नेताओं में मिलेगी और साहित्यकारों में थे शायद बिल्कुल ही नहीं। इस दौर के किसान आंदोलनों का जीवंत चित्र सहजानंद की रचनाओं के बाद अगर कहीं उपलब्ध है तो वह राहुल जी के संस्मरणों में है।

तिब्बत की चौथी यात्रा से लौटने के तुरंत बाद कोलकाता में 5 अक्टूबर 1938 को राहुल जी ने अखबार वालों को बता दिया कि "अब मैं क्रियात्मक राजनीति में भाग लेने जा रहा हूं।" राजनीति में भाग लेने का यह उनका पहला अवसर नहीं था इससे पहले भी असहयोग के दौरान राजनीति के मैदान में उतर चुके थे। उस समय भी वे जिस स्वराज की कल्पना करते थे 'वह काले सेठों और बाबुओं का राज नहीं था, वह राज था किसानों और मजदूरों का, क्योंकि तभी गरीबी और अपमान से जनता मुक्त हो सकती थी (राहुल वांग्मय, खंड 1, जिल्द 2 ,पृष्ठ 303)

अब तो 11 वर्षों बाद उनकी यह स्वराज कल्पना मार्क्सवाद के अध्ययन और सोवियत समाज के प्रत्यक्ष अनुभव से ठोस और वैज्ञानिक हो चुकी थी । कोलकाता में ही उन्हें कम्युनिस्ट नेता सोमनाथ लाहिडी से मालूम हुआ कि बिहार में अभी कम्युनिस्ट पार्टी नहीं है । कम्युनिस्ट वहां कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के साथ मिलकर काम कर रहे हैं । बिहार आकर किसान आंदोलन में कूदने से पहले वे कुछ दिन किसानों और मजदूरों के बीच घूमते रहे। उन्होंने महाराजगंज, अतरसन, एक्मा, बरेजा, मांझी आदि गांवों में घूमकर राजनीतिक परिस्थितियों का अध्ययन किया । बनारस और इलाहाबाद के छात्रों के बीच व्याख्यान दिए। 25 नवंबर को डालमियानगर पहुंचे , वहां फैक्ट्री मजदूरों की दशा नजदीक से देखी। वहां से गया जिले के गांव देव पहुंचे । जहां किसानों का शिक्षण शिविर चल रहा था । कइनी, दरभंगा के बिहार प्रांतीय किसान आंदोलन में पहुंचे जहाँ किसान , सत्याग्रह के योद्धा सभापति कार्यानंद को बड़े श्रद्धा और उत्साह के साथ सुन रहे थे । वह मुजफ्फरपुर में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के वार्षिक सम्मेलन में शरीक हुए और जयप्रकाश नारायण के अनुरोध पर पार्टी के सदस्य भी बने । ओइनी के किसान सम्मेलन में ही इन्हें पता लगा कि किसानों की जय का नारा जिन लोगों ने लगाकर किसानों से वोट लिए, वहीं कांग्रेसी मंत्रिमंडल में पहुंचकर अब कोई बात करने की जमींदारों की तकलीफों पर लेक्चर देने लगते हैं।

2 जनवरी 1939 को जब भी छपरा पहुंचे। जहां जिले भर के किसान कार्यकर्ता एकत्र थे। वही अमवारी के किसानों ने उन्हें बताया कि हमारे खेत छीन लिए गए हैं, हमने इधर बहुत दौड़-धूप की, कांग्रेस नेताओं के पास भी गए मगर कोई नहीं सुनता (पृष्ठ 306) । राहुल जी 5 जनवरी को अमवारी पहुंचे। किसानों से बातचीत की

तो मालूम हुआ मजिस्ट्रेट ने भी किसानों पर 144 लगा दी और यह सब कांग्रेसी मंत्रियों के राज में हो रहा था(पृष्ठ 307)। जमींदार ने किसानों से सारे खेत छुड़ा लिए। 6 जनवरी को अमवारी के पास के गांव जैजोरी में पहुंचे । वहां के किसानों ने अपना इरादा पक्का कर लिया था कि हम अपना खेत किसी भी हालत में नहीं छोड़ेंगे। सुल्तानपुर गांव में किसानों से पता लगा कि वहां के जमींदार कांग्रेस के बड़े नेता हैं, लेकिन किसान उनके जुल्म से परेशान है। राहुल जी ने सीवान के अंग्रेज एसडीओ से अमवारी के किसानों की समस्याएं बयान कि उसने जांच करने का आश्वासन दिया लेकिन खुद कभी जांच करने नहीं गया।

18 और 19 फरवरी को एक पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव के सिलसिले में हिलसा के नव युवकों के बीच रहकर राहुल जी 20 फरवरी को छपरा पहुंचे तो पता चला कि अमतवारी में उनके ऊपर दफा 144 लगा दी गई है । इसे सरकार की चुनौती मानकर उन्होंने अब अमवारी में ही दफा 144 तोड़कर सत्याग्रह करने का निश्चित किया। सत्याग्रह को एक किसान के खेत में पहुंचकर ऊंख काटना था। जमींदार इस खेत पर जबरन अपना दावा ठोक रहा था। सवेरे 10:00 बजे सत्याग्रह की टोली खेत पर पहुंची । इसके नायक थे राहुल बाबा। शराब पिलाकर मतवाला किए दोनों हाथी पास खड़े थे । उनके पास सैकड़ों लठधरों की पांती खड़ी थी। इंस्पेक्टर ने सशक्त पुलिस को तीन फलांग दूर एक बाग में रोक दिया। खेत पर केवल दो थानेदार, एक सिपाही और दो चौकीदार थे। इंस्पेक्टर को अच्छी तरह मालूम था कि जमींदार खून करने को उतारू हैं। फिर भी हाथियों और लठधरों को खेत पर जमा होने देना और सिपाहियों को ना भेजना । इसका क्या अभिप्राय था ? यह बिल्कुल स्पष्ट था (पृष्ठ 314) । सत्याग्रही निहत्थे थे । हाथ में हंसुआ लिए हुए वे ऊख काटने आगे बढ़े। राहुल जी ने जो ऊख काटी ।तभी थानेदार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया । इसी तरह बाकी को भी गिरफ्तार कर लिया। ' मैंने सिर्फ पीछे की ओर किया। देखा, जमींदार का हाथीवान कुर्बान हाथी से उतरा। मैंने दूसरी ओर मुंह घुमाया । उसी वक्त खोपड़ी के बाई ओर जोर की लाठी लगी। मुझे कोई दर्द मालूम नहीं हुआ। हां देखा! सिर से खून बह रहा है।

26 फरवरी को पुलिस वाले सीवान जेल से छपरा जेल में ले जाने के लिए किसान बंधुओं को रस्सी से घेरकर स्टेशन की ओर से चले । राहुल जी के नेतृत्व में बंदी रास्ते भर नारे लगाते रहे - इंकलाब जिंदाबाद ,किसान राज कायम हो, मजरू राज कायम हो, जमींदारी प्रथा नाश हो, कमाने वाला खाएगा ,इसके चलते जो हो । सीवान के नागरिकों के लिए यह बिल्कुल नई चीज थी । यह नहीं कि वह राहुल बाबा के सिर फूटे डोरी में बंधे सड़क पर जाते देख रहे थे , बल्कि यह भी ख्याल करते थे यह सब कुछ गांधी बाबा के राज में हो रहा है। छपरा स्टेशन से भी वे लोग पैदल ही जेल ले जाए गए। छपरा और सीवान शहर में ही नहीं , गांव गांव में अमवारी के किसान सत्याग्रह और राहुल जी का सिर फोड़ने की खबर फैल गई । छपरा कॉलेज के अध्यापक और बाद में प्रिंसिपल 'मनोरंजन प्रसाद सिन्हा' ने कविता लिखी —'राहुल के सिर से खून गिरे , फिर क्यों ना वह खून उबल उठे। अखबारों में खबर छप गई। अमवारी के किसान सत्याग्रह का जन समर्थन बढ़ रहा था। वहाँ के किसान दबे नहीं और आसपास के सभी किसान उनकी मदद के लिए तैयार थे। वह हजारों की संख्या में जेल आए होते, यदि पुलिस ने गिरफ्तारी बंद ना कर दी होती। यहां सत्याग्रह आश्रम में बहुत से स्वयंसेवी रहते थे। जिनके खाने-पीने का इंतजाम आसपास के लोग करते थे । हाटो में स्वयंसेवक जाते, तो साग भाजी बेचने वाली औरतें उनको तरकारी देती । किसानों को यह समझाने की जरूरत नहीं थी कि यह उनकी अपनी लड़ाई है । (पृष्ठ 315)। इधर

प्रशासन की तरफ से समझौते का दिखावा भी जारी था। समझौते के लिए सत्याग्रह कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया गया था। लेकिन समझौते में टालमटोल को लक्ष्य करके 13 मार्च से फिर शुरू हो गया। सुविधाएं मुहैया करने की मांग को लेकर राहुल जी ने 18 मार्च से भूख हड़ताल शुरू कर दी। 22 मार्च को सुविधाएं मुहैया करने की मांगे मान ली गई और राहुल जी ने हड़ताल स्थगित कर दी। जेल में ही उन्हें मालूम हुआ कि अमवारी की सभाओं में 15- 20 हजार किसान आते हैं। सत्याग्रह जारी है। सवेरे औरतें और बच्चे सत्याग्रह पर जाते हैं और तीसरी बेला में मर्द। 28 मार्च को पता चला कि अमवारी में सत्याग्रहियों को मारा पीटा जा रहा है। कुछ लोग घायल हो गए हैं। राहुल जी और उनके साथियों पर दफा 379 के तहत चोरी का इल्जाम लगाकर सीवान के मजिस्ट्रेट की अदालत में मुकदमा चलाया गया।

ट्रेन में कुछ किसान साथियों से राहुल जी को मालूम हुआ कि सारे जेल के किसानों में चेतना आ गई है। वह जमींदारों के सामने दबने को तैयार नहीं है। (पृष्ठ 317) हथकड़ियां लगाए हुए राहुल जी का फोटो अखबारों में छपा। जनता में करा कांग्रेश मंत्रिमंडल की खूब किरकिरी हुई अगली तारीख पर 14 अप्रैल को फिर हथकड़ियां लगाकर राहुल और उनके साथियों को पुलिस ले चली। सीवान स्टेशन पर उतरते ही लोगों की भीड़ बढ़ने लगी और हजारों आदमी पीछे-पीछे जेल तक गए पृष्ठ 318 15 अप्रैल के जेल के भीतर मुकदमे का नाटक रचा गया।

आजादी की लड़ाई में राहुल जी इससे पहले दो बार जेल जा चुके थे लेकिन इस बार अंग्रेजी राज्य के कानून में उन पर चोरी का इल्जाम लगाकर बंद किया था वह भी कांग्रेसी मंत्रिमंडल के दौर में यह दफा 143 और दफा 379 में है चमार की कड़ी सजा हुई ₹20 जुर्माना न देने पर 3 मार्च की और सजा बढ गई।

यह मुझे तीसरी बार जेल की सजा हुई और वह भी चोरी के अपराध में पर सख्त सजा खूब। (पृष्ठ 319) किसानबंदी- शराब बंदी की मां पर सरकार अभी चिंता कर रही थी। राहुल जी ने अपनी मांगों को लेकर फिर भूख हड़ताल करने की सूचना 13 अप्रैल को बिहार के प्रधानमंत्री को भेज दी थी। पहली बार राहुल जी ने भूख हड़ताल उस दिन के लिए स्थगित करके सरकार को इस पर सोचने विचारने का काफी मौका दे दिया था। लेकिन सरकार के रवैए में कोई फर्क न था। अंततः राहुल जी ने 1 मई को भूख हड़ताल फिर से शुरू कर दी। 25 मार्च से 'जीने के लिए' नामक उपन्यास को उन्होंने नागार्जुन द्वारा बोल बोलकर लिखवाया, यह काम भूख हड़ताल के दौरान भी तीसरे दिन तक जारी रखा। कांग्रेसी नेता अनशन तुड़वाने के लिए राहुल जी को बहलाने खुश करने में जरूर लगे रहे, लेकिन किसान कैदियों को राजनीतिक बंदी मानने से अंत तक परहेज करते रहे। राहुल जी के अनशन को लेकर अखबारों में और जनता के बीच कांग्रेसी सरकार की खूब आलोचना हो रही थी। कॉलेजों और स्कूलों के छात्र राहुल जी के समर्थन में रोज जुलूस निकाल रहे थे। राहुल जी अशक्त हो गए थे, लेकिन अहिंसावादी कांग्रेसी नेता रत्ती भर नहीं पिघले। 10 मई को उन्हें जेल से बाहर कर दिया गया। 17 मई को किसान सभा ने सीवान में जबरदस्त जुलूस निकाला। इसमें अमवारी से 14 मील चलकर 300 मर्द और 100 से अधिक किसान औरतें आई थी। सभा को राहुल जी ,यदुनंदन शर्मा और स्वामी सहजानंद सरस्वती ने भी संबोधित किया। सभा को देखकर ऐसा मालूम होता था- कि 'किसान के पास अटूट हिम्मत है वह अपराधी हैं स्त्रियां नए तरह के गीत गाती थी जिसमें किसानों के दुख और अत्याचार की बात होती थी।'"(पृष्ठ 322)

कांग्रेसी नेता किसानों की जय का चोला उतार कर अपने असली जमींदार समर्थक के रूप में सामने आ गए थे। वे राहुल जी को फूटी आंखों से देखना नहीं चाहते थे। क्योंकि 'मेरी वजह से जनता में बदनाम हो रहे थे ।' उन्होंने राहुल जी के खिलाफ खुलकर निंदा प्रचार शुरू किया । उन्होंने अखबारों में राहुल जी की दूसरी पत्नी लोला और उनके पुत्र का फोटो और निजी चिट्टियां छपवाई।- अधर्मी है , मुसलमानों के घर खाते हैं । ऐसा कहकर जमींदारों ने किसान में उन्हें बदनाम करना चाहा। ऐसे निंदा प्रचार से किसानों में राहुल जी की लोकप्रियता घटने के बजाय और बढी।

19 जून राहुल जी खितौली के किसानों के मसले में वहां पहुंचे । सभा स्थल पर जमींदार अशर्फी साहू के लठियल खड़े थे। राहुल जी ने कहा - कि क्या अशर्फी साहू इतने उतर आए हो और एक लठियल को पकड़कर जमींदार के घर की ओर चले। उन्होंने पूछा - आप धर्मात्मा बनते हैं, आपने मंदिर खड़ा किया है बहुत पूजा पाठ करते हैं क्या आप लड़ाई झगड़ा भी करना चाहते हैं ? वह मीठी मीठी बातें कर कर अपनी माया पसारने लगा। उसी वक्त उनका पुत्र जगन्नाथ बंदूक लेकर पहुंच गया। बहुत से लोग भाला तलवार लेकर खड़े हुए पर राहुल जी ने उनका सामना किया । उन्होंने ललकारा और कहा- "क्यों खड़े हो ? यदि कुछ भी तुम्हें ताकत है तो अपनी तलवार और भाले को मेरे ऊपर चलाओ । मैं तुम्हारे सामने खड़ा हूं "। सब वहां से चले गए राम भवन और अखिलानंद पर लाठियां पड़ी थी । अखिलानंद की बाई हथेली की हड्डी टूट गई थी। राहुल जी ने उन दोनों को बैलगाड़ी से सीवान भेज दिया और खुद छितौली में डटे रहे। तभी पुलिस राहुल जी को गिरफ्तार करके सिवान लेकर उसी दिन उन्हें सीधे हजारीबाग सेंट्रल जेल के लिए रवाना कर दिया गया छपरा जेल से निकलते समय राहुल जी ने मन में सोच लिया था कि अभी तो हमें कई बार जेल आना है लेकिन जब तक हमारी मांगे पूरी नहीं होती तब तक जेल में भी नहीं खाना है हजारीबाग पहुंचते ही उन्होंने किसान बंदी राज बंदी की मांग को लेकर भूख हड़ताल शुरू कर दी यहां जेल में छपरा जेल के साथ नागार्जुन जलील मजहर संकल्प मौजूद थे राहुल जी अपनी जिद पर अड़े रहे और 12 दिन तक उन्होंने 8-8, 10- 10 घंटे तक पढ़ना भी चालू रखा। लेकिन उसके बाद कमजोरी, सिर में झुनझुनी, एसिडिटी, छाती में दर्द क्रमशः बढ़ने से हालत खराब हो गई। उपवास के 17 में दिन वजन 174 पौंड से घटकर 156 पौंड रह गया। लेकिन सरकार किसान बंधुओं को राज बंदी मानने को तैयार नहीं हुई और मरणासन्न राहुल जी को जेल से बाहर कर दिया। 4 दिन हजारीबाग के अस्पताल में रहकर 14 जुलाई को राहुल जी पटना पहुंचे, तो किसान सभा के कार्यालय में उन्हें मालूम हुआ कि बिहार के हर जिले में किसानों ने अपने खेतों को हाथ से न जाने देने का निश्चय कर लिया है । सिर्फ गया जेल में 50 से अधिक ग्रामों में सत्याग्रह चढ़ा हुआ है।(पृष्ठ 327)

मिलते हैं हमारी और छितौली के सत्याग्रह ने बहुत जगह के दबे हुए किसानों को उधार दिया ।(पृष्ठ 328)। इसी प्रसंग में राहुल जी लिखते हैं कि "पाठकों को शायद खयाल होगा कि मैं इन अत्याचारों को 1000 वर्षों के लिए अमर कर रहा हूं मुझे विश्वास नहीं है कि यह पुस्तक हजारों वर्ष तक रहेगी यदि रही तो भविष्य के हमारे उत्तर उत्तर अधिकारियों के लिए इससे बहुत सी बातें मालूम होगी"(पृष्ठ 328)। विद्या सिंह जैसे जालिम जमींदारों और उनके नेताओं और अधिकारियों का हाल बयान करके राहुल जी ने वहीं पर पवित्र कर्तव्य पूरा किया है जो प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में किया है सदियों से जमी हुई सामंती व्यवस्था के विरुद्ध जिन किसानों ने विद्रोह का

झंडा बुलंद किया उनकी संघर्ष गाथा तो अमर है कि उनके लिखने वाले राहुल जी की कलम भी अमर राहुल जी की इस किसान गाथा से उनके उत्तराधिकारी यों की कई पीढ़ियां प्रेरणा और शिक्षा ग्रहण करती रहेंगी।

अपने सार्वजनिक राजनीतिक जीवन के आरंभ में ही राहुल जी का अध्ययन किसान संगठन की ओर गया था और उन्होंने सहजानंद से भी पहले सन् 1921 में बिहार प्रांतीय किसान सभा का गठन किया था, मगर यह बात समय से बहुत पहले की गई इसलिए वस्त्र कागजी रह गई । (राहुल वांग्मय, खंड 2, पृष्ठ 66) वह किसान आंदोलन की रणभूमि में बकायदा उतरे। 1948 में जब बिहार में किसान सभा के झंडे के नीचे विराट के साथ जागरण अपने उभार पर था ।1944 के विजयवाड़ा किसान आंदोलन के बाद फिर वह अपनी अगली यात्रा और पुस्तकों की योजनाओं में लग गए इतने कम समय में जितनी तेजी से वह एक गतिशील और कुशल किसान नेता के रूप में उभरे और व्यापक जनता में अपार लोक मान्यता प्राप्त की उसकी मिसाल मिलने मुश्किल है।

****